

और पुरुष की भी निष्पक्ष न्याय मिले ? जहाँ बच्चे विवादों का सबसे बड़ा शिकार न बनें ? जहाँ बुजुर्गों का सम्मान मिले और परिवार भय या दबाव से नहीं, बल्कि विश्वास से जुड़े हों ? भारत की आजादी के लगभग आठ दशक बाद हमें केवल राजनीतिक और आर्थिक प्रगति का आकलन नहीं करना चाहिए। हमें यह भी देखना होगा कि हमारे सामाजिक संबंध कितने मजबूत हैं और हमारी नई पीढ़ी अधिकारों के साथ कर्तव्यों को कितना समझती है। आखिर हमें किस दिशा में जाना है ? समाज के केवल कानून से नहीं चलता और न केवल परंपराओं से। समाज कानून, नैतिकता, शिक्षा, परिवार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक जिम्मेदारी के संतुलन से चलता है। कानून किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता छीनने व न्याय नहीं होना चाहिए। लेकिन कानून और समाज दोनों की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना भी है कि किसी की स्वतंत्रता दूसरे व्यक्ति के सम्मान, विश्वास और जीवन को अनुचित रूप से नुकसान पहुंचाने का साधन न बने। आने वाली पीढ़ियों के सामने सबसे बड़ा संकट केवल आर्थिक नहीं होगा। यदि रिश्तों से विश्वास, परिवारों से संवाद और जीवन से जिम्मेदारी समाप्त होती गई, तो सामाजिक असुरक्षा और मानसिक तनाव कहीं अधिक गंभीर चुनौती बन सकते हैं। इसलिए आज सबसे बड़ी आवश्यकता किसी एक वर्ग, विचारधारा या जीवनशैली को दोषी ठहराने की नहीं, बल्कि ईमानदार सामाजिक विश्वास की है। हमें अधिकार चाहिए, लेकिन कर्तव्य भी चाहिए। हमें स्वतंत्रता चाहिए, लेकिन जिम्मेदारी भी चाहिए। हमें आधुनिकता चाहिए, लेकिन मानवीय संवेदनाएं भी चाहिए। और सबसे महत्वपूर्ण—हमें ऐसा समाज चाहिए जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता और परिवार का स्वाभिमान एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक संतुलित और न्यायपूर्ण समाज के दो मजबूत आधार बनें। प्रश्न यह नहीं है कि हम कितने आधुनिक हो गए हैं। प्रश्न यह है कि आधुनिकता की दौड़ में कहीं हम ईमानियत, विश्वास, जिम्मेदारी और रिश्तों की गरिमा तो नहीं खो रहे हैं ?

गणका आन

बनाए रखना—ये सभी सेवा के स्वरूप हैं। आज हमें आवश्यकता है— ज्ञान के साथ संस्कार की, आस्था के साथ सेवा की, आधुनिकता के साथ विवेक की, अधिकारों के साथ कर्तव्य की, और व्यक्तिगत सफलता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की। यदि समाज का प्रत्येक सक्षम व्यक्ति अपने जीवन की कुछ ऊर्जा जनहिब में लगाने का संकल्प ले, तो परिवर्तन दूर नहीं है। निष्कर्ष कल्पनीय समाज की सरलता, सात्विकता और सामाजिक एकजुटता उसकी महत्वपूर्ण पहचान रही है। बदलते समय में इस पहचान को बनाए रखते हुए शिक्षा, तकनीक और आधुनिक अवसरों को अपनाया ही सही दिशा होगी। गुरु परंपरा से प्राप्त प्रेरणा, माता-पिता के संस्कार, शिक्षा से मिला ज्ञान और समाज के प्रति जिम्मेदारी—इन चारों का समन्वय एक सशक्त भविष्य का निर्माण कर सकता है। आज का आन किन्हीं परंपराओं को केवल दोहराने का नहीं, बल्कि उसके कारात्मक मूल्यों को आधुनिक जीवन में सार्थक बनाने का है। आइए, हम अपने ज्ञान को केवल व्यक्तिगत उपलब्धि तक सीमित न रखें। अपनी क्षमता को समाज के सर्वांगीण विकास से जोड़ें। जो लोग पहले से सेवा का कार्य कर रहे हैं, उनका सहयोग और सम्मान करें तथा नई पीढ़ी को ऐसा वातावरण दें जिसमें वह आधुनिक भी बने और संस्कारित भी। गुरुवाणी यदि हमारे भीतर सेवा, सदाचार, संयम और मानवता की भावना जागृत करे है, तो उसे जीवन में धारण करना ही उसके प्रति सच्ची श्रद्धा होगी। समाज का भविष्य किसी एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होता। जब शिक्षित वर्ग जागता है, युवा कारात्मक दिशा में आगे बढ़ते हैं, महिलाएं नेतृत्व करती हैं, संत समाज मार्गदर्शन करता है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझता है—तभी एक सशक्त, संस्कारित और आत्मसम्मानी समाज का निर्माण होता है। आइए, ज्ञान को सेवा से, सेवा को संस्कार से और संस्कार को समाज के उज्ज्वल भविष्य से जोड़ने का संकल्प लें। गुरु महाराज श्री राजेश्वर भगवान तथा भगवान श्रीकृष्ण की कृपा समस्त समाज पर बनी रहे और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सद्बुद्धि, सदाचार, सेवा तथा मानव कल्याण की भावना निरंतर जागृत होती रहे।

राम वनगमन से केवट भक्ति तक भाव-विभोर हुए श्रद्धालु



भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 6 सितंबर 2026। पैलेस ग्राउंड गेट नंबर-9 पर आयोजित सात दिवसीय दिव्य चेतना श्रीरामकथा के छठे दिन अयोध्या कांड के भावपूर्ण प्रसंगों ने कथा पंडाल को भक्तिमय बना दिया। परम पूज्य श्री राजन जी महाराज ने श्रीराम के राज्याभिषेक की तैयारी से लेकर कैकेयी के वरदान, राम वनगमन, लक्ष्मण के समर्पण, निषादराज प्रसंग और केवट की भक्ति तक का मार्मिक वर्णन किया। 1 सितंबर से शुरू हुई कथा का आयोजन 7 सितंबर तक किया जा रहा है। कथा का सामान्य समय प्रतिदिन शाम 3 से 7 बजे तक रखा गया है। राज्याभिषेक की तैयारी के बीच बदली अयोध्या की तस्वीर महाराज जी ने बताया कि राजा दशरथ ने



दशरथ गहरे सदमे में चले गए। राम जहां हैं, वहीं अयोध्या श्रीराम के वन जाने का निर्णय सुनकर लक्ष्मण ने भी उनके साथ जाने को इच्छा जताई। माता सुमित्रा ने उन्हें श्रीराम की सेवा को सर्वोच्च कर्तव्य मानने सेकित किया। उन्होंने कहा कि जीवन में आगे बढ़ी तो संश्ररा द्वारा कैकेयी को प्रभावित करने और राजा दशरथ से दो वरदान मांगने का प्रसंग सामने आया। कैकेयी ने भरत के लिए राजगद्दी और श्रीराम के लिए 14 वर्ष का वनवास मांग लिया। इसके साथ ही राज्याभिषेक की तैयारियां शोक में बदल गईं और राजा



छायाचित्र किशोर कुमार दत्तरी

अवसर ही सबसे बड़ा धन था। महाराज जी ने केवट प्रसंग के माध्यम से बताया कि भक्ति में सामाजिक पद या धन का नहीं, बल्कि श्रद्धा, प्रेम और निष्काम समर्पण का महत्व है। श्रीराम का चरित्र सेवा, त्याग, मयार्दा और प्रेम का संदेश देता है। यजमान और आयोजन समिति की सहभागिता छठे दिवस की आरती में मुख्य यजमान एवं सहयोगी मुख्य यजमान श्री सुनील कुमार तिवारी और श्रीमती उपासना तिवारी ने सहभागिता की। कथा संरक्षक श्री रंगनाथ तिवारी भी उपस्थित रहे। द्रष्ट अध्वक्ष श्री शैलेश मिश्रा ने कहा कि श्रीरामकथा का उद्देश्य धार्मिक आस्था के साथ भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों को नई पीढ़ी तक

कर्नाटक में शिक्षकों को मिला TR सम्मान

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 6 सितंबर 2026। शिक्षक दिवस के अवसर पर कर्नाटक सरकार ने राज्य के शिक्षकों के सम्मान से जुड़ा महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने कैबिनेट की सहमति के बाद घोषणा की कि राज्य के करीब साढ़े चार लाख शिक्षक अपने नाम के आगे TR (Teacher) उपसर्ग का उपयोग कर सकेंगे। सरकार के अनुसार, इस निर्णय का उद्देश्य शिक्षकों की सामाजिक प्रतिष्ठा और उनके पेशे के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना है। इस संबंध में स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग की ओर से सरकारी आदेश जारी किए जाने की जानकारी भी दी गई है। शिक्षकों के योगदान को सम्मान मुख्यमंत्री ने विजयनगर जिले के कुडलीगी में आयोजित प्रजा सेवा अभियान के दौरान शिक्षकों के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि माता-पिता व्यक्ति को जन्म देते हैं, जबकि शिक्षक उसे जीवन में सही दिशा दिखाने और व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से समाज की सेवा करना ईश्वर की सेवा के समान है। मुख्यमंत्री के अनुसार, शिक्षण केवल रोजगार नहीं बल्कि समाज और आने वाली पीढ़ियों के निर्माण से जुड़ी जिम्मेदारी है। करीब 4.5 लाख शिक्षकों को लाभ राज्य सरकार के इस फैसले से कर्नाटक के लगभग 4.5 लाख शिक्षकों को अपने नाम से पहले TR लगाने की अनुमति मिलने की बात कही गई है। सरकार का मानना ​​है कि इससे शिक्षकों के आत्मसम्मान को बढ़ावा मिलेगा और समाज में शिक्षक पेशे के प्रति सम्मान की भावना मजबूत होगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो समाज अपने शिक्षकों का सम्मान करता है, वह अपने भविष्य का सम्मान करता है। उन्होंने शिक्षकों के साथ सैनिकों, मजदूरों और किसानों को भी देश के महत्वपूर्ण स्तंभ बताया और उनके योगदान के सम्मान को सरकार की जिम्मेदारी बताया। सम्मान के साथ जिम्मेदारी का संदेश सरकार का यह कदम शिक्षकों की सामाजिक पहचान को सम्मान देने की दिशा में उठाया गया कदम माना जा रहा है। TR उपसर्ग को शिक्षकों के लिए केवल पहचान नहीं, बल्कि उनके पेशे और सामाजिक दायित्व के सम्मान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।



नवग्रह महाजाप में उमड़ी आस्था, सैकड़ों परिवारों ने लिया लाभ



भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 6 सितंबर 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादाबाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में गुरुदेव श्री मलयप्रभ सागर जी म. सा. की निश्रा एवं पूज्य गुरुवर्या डॉ. प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. के सान्निध्य में नवग्रह महाजाप एवं पूजन का भव्य धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों परिवारों ने श्रद्धापूर्वक जाप एवं पूजन का लाभ लिया। ट्रस्ट के अध्यक्ष तेजराज मालानी ने नवग्रह पूजन के धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन दर्शन में आराधना, मंत्र-जाप, संयम और शुभ भावनाओं को विशेष महत्व दिया गया है। महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने कहा कि



की प्रतिष्ठित प्रतिमा को अपने निवास पर ले जाने का लाभ खुडाला निवासी पारसमल जी, महावीरचंद जी एवं पुनमिया परिवार ने लिया। परमात्मा एवं नवग्रहों की आरती का लाभ संघवी श्रीमती शांतिदेवी पुखराज जी गुलेच्छा परिवार ने प्राप्त किया। भक्तिमय गीतों से गुंजा आयोजन स्थल कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में श्री श्रीमदत्त कुशल सूरी जैन सेवा एवं संगीत मंडल का विशेष सहयोग रहा। संगीत मंडल के राजेन्द्र गुलेच्छा, सनी रांका, नितेश बोहरा एवं मनन बोहरा ने भक्तिमय गीतों की प्रस्तुतियां दीं। मधुर भजनों से आयोजन स्थल भक्तिरस से सराबोर हो गया और श्रद्धालु भक्ति में भाव-विभोर दिखाई दिए। पूरे आयोजन के दौरान श्रद्धा, भक्ति और आध्यात्मिक उल्लास का वातावरण बना

भारतार्थ खबर

Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 6 सितंबर 2026। जेसीआई बेंगलुरु कॉस्मो द्वारा सेवा स्पर्श झ टचिंग लाइव्स थ्रू सर्विस के अंतर्गत निमहांस (NIMHANS) के कन्वेंशन हॉल परिसर में विविध सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम राष्ट्रीय अध्यक्ष आरपीपी भरत एन. आचार्य की गरिमायी उपस्थिति में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष के स्वागत के साथ हुआ। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने और सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाने का संदेश दिया। सेवा गतिविधियों के तहत निमहांस परिसर में रॉक बैंचों का उद्घाटन कर उन्हें समर्पित किया गया। जरूरतमंद मरीजों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए व्हीलचेयर का वितरण भी किया गया। पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ जीवनशैली को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सस्टेनेबल सिफिंग पहल के अंतर्गत स्टेनलेस स्टील की पानी की बोतलों का वितरण किया गया। आयोजकों के अनुसार, निमहांस

रिहैबिलिटेशन सेंटर के लिए दो बछड़ों का दान भी किया गया। इस पहल के माध्यम से जीवों के प्रति करुणा, संवेदन और जिम्मेदारी का संदेश देने का प्रयास किया गया। शिक्षक दिवस पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बांधा समां



शिक्षक दिवस के अवसर पर जूनियर, जेसी विंग के सदस्यों ने विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। प्रस्तुतियों ने समारोह में उत्साह और भावनात्मक जुड़ाव का वातावरण बनाया। कार्यक्रम में निमहांस के अधिकारी, प्रायोजक, दानदाता तथा

जेसीआई बेंगलुरु कॉस्मो के सदस्य उपस्थित रहे। सभी के सहयोग से सेवा गतिविधियों को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया। टीमवर्क से सफल हुआ सेवा अभियान इस सेवा पहल का नेतृत्व अध्यक्ष जेसी ललिता बोथरा ने किया।

परियोजना के सफल संचालन में प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर जेसी मनीष मेहता एवं जेसी पर्व जैन का योगदान रहा। वहीं, प्रोजेक्ट डायरेक्टर जेसी रूपचंद जैन कुमुद एवं जेसी आशिक पिरगल ने परियोजना को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष आरपीपी भरत एन. आचार्य ने जेसीआई बेंगलुरु कॉस्मो द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की। उन्होंने सदस्यों से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए सेवा की भावना को निरंतर आगे बढ़ाने का आान किया। जेसीआई बेंगलुरु कॉस्मो, इंडिया की यह पहल स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण संरक्षण, जीवों के प्रति करुणा और मानव सेवा के मूल्यों का एक सार्थक संगम बनकर सामने आई। कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश भी दिया गया कि समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए हमेशा बड़े प्रयासों की आवश्यकता नहीं होती। सेवा और संवेदना से किता गया एक छोटा प्रवास भी किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन में नई उम्मीद जगा सकता है। सेवा का एक छोटा सा स्पर्श, किसी के जीवन में बड़ी उम्मीद जगा सकता है।

समाचार प्रेषक: रूपचंद जैन कुमुट, बेंगलुरु

भाजपा की पदयात्रा 100 किमी पार, विजयेंद्र बोले- मिल रहा जनसमर्थन



पदयात्रा को समाज के विभिन्न वर्गों से समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि किसान, महिलाएं, युवा और बुजुर्ग बड़ी संख्या में इसमें शामिल हो रहे हैं।

सरकार पर मुद्दों को लेकर दबाव का दावा विजयेंद्र ने कहा कि भाजपा ने भ्रष्टाचार और किसानों से जुड़े मुद्दों को लेकर सरकार के सामने सवाल उठाए हैं। उन्होंने विशेष रूप से तत्कालीन मंत्री बी. नारेंद्र के इस्तीफे की मांग किया। उनके मुताबिक, सरकार ने 21 से 23 सितंबर तक विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने का निर्णय लिया है। विजयेंद्र ने इसे पदयात्रा से उठाए गए मुद्दों के प्रभाव के रूप में

बताया।

उत्तर कर्नाटक के किसानों के मुद्दे उठाए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार को उत्तर कर्नाटक का दौरा कर किसानों की समस्याओं पर ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ा है। उन्होंने मुख्यमंत्री सिद्धारमेया को लेकर भाजपा द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे राजनीतिक आरोपों का भी उल्लेख किया।

हालांकि, सरकार की ओर से इन आरोपों

पर प्रतिक्रिया का विवरण इस बयान में सामने नहीं आया है। भाजपा ने 100 किमी पूरा होने की जानकारी दी

भाजपा की कर्नाटक इकाई ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट कर बताया कि विजयेंद्र के नेतृत्व में निकाली जा रही बेल्तारी चलो पदयात्रा ने 100 किलोमीटर की दूरी पूरी कर ली है। पार्टी ने पदयात्रा में शामिल कार्यकर्ताओं और समर्थकों के प्रति आभार जताया। पदयात्रा के जर्िए भाजपा कांग्रेस सरकार की नीतियों, कथित भ्रष्टाचार और किसानों से जुड़े मुद्दों को लेकर राजनीतिक दबाव बनाने का प्रयास कर रही है। आने वाले दिनों में यह अभियान राज्य की राजनीति में और तेज होने की संभावना है।

पाव भाजी के साथ मिली जली बीड़ी, मचा हंगामा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 6 सितंबर 2026। ऑनलाइन खाना मंगाने के दौरान बेंगलुरु के एक ग्राहक के साथ कथित तौर पर ऐसा मामला सामने आया, जिसने खाद्य स्वच्छता और पैकेजिंग व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए। ग्राहक का दावा है कि उसने जौमैटो के जरिए पाव भाजी का ऑर्डर किया था। डिलीवरी मिलने के बाद सलाद के पैकेट में कटे हुए प्याज के बीच एक आधी जली बीड़ी मिली। ग्राहक ने इस कथित घटना की तस्वीर सोशल मीडिया पर साझा करते हुए अपना अनुभव बताया। तस्वीर में कटे हुए प्याज के बीच बीड़ी जैसी वस्तु दिखाई दे रही है। हालांकि, बीड़ी भोजन में किस स्तर पर पहुंची, इसकी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। सोशल मीडिया पर साझा की तस्वीर लिंकडइन यूजर प्रियम के अनुसार, पाव भाजी का पैकेट खोलने पर उन्हें सलाद में रखे प्याज के बीच आधी जली बीड़ी दिखाई दी। उन्होंने तस्वीर साझा करते हुए घटना पर हैरानी जताई। पोस्ट सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर लोगों ने खाद्य पदार्थों की स्वच्छता और पैकेजिंग को लेकर चिंता जताई। कुछ यूजर्स ने घटना पर व्यंग्यात्मक टिप्पणियां कीं, जबकि कई लोगों ने इसे गंभीर मामला बताते हुए जांच की मांग की। जौमैटो ने मांगी ऑर्डर की जानकारी मामला सोशल मीडिया पर सामने आने के बाद जौमैटो के दौरान भोजन के साथ गई अथवा डिलीवरी प्रक्रिया के किसी अन्य चरण में पैकेट में पहुंची। मामले की वास्तविक स्थिति संबंधित रेस्तरां, डिलीवरी प्रक्रिया और खाद्य सुरक्षा जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। फिलहाल उपलब्ध जानकारी ग्राहक द्वारा साझा किए गए दावे और कंपनी की प्रारंभिक प्रतिक्रिया पर आधारित है।



भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

हैदराबाद, 6 सितंबर 2026। आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने परिवार और सामाजिक परंपराओं में आ रहे बदलावों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि माता-पिता का सान्निध्य और उनकी सेवा संतान के जीवन का महत्वपूर्ण सौभाग्य है। उन्होंने कहा कि माता-पिता का मार्गदर्शन, अनुशासन और स्नेह व्यक्ति के जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके अनुसार, जीवन में सफलता प्राप्त करने के बाद भी माता-पिता के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना बनाए रखना आवश्यक है। वे रविवार को महावीरस्वामी जैन श्चेतांबर संघ के तत्वावधान में कल्याणकारी तपगण्ड्य वर्षावास समिति द्वारा एगिजिशन ग्राउंड स्थित जगद्धु हेसूरुप्ति वाटिका में आयोजित पारिवारिक सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं जिज्ञासु उपस्थित रहे। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था को बताया महत्वपूर्ण आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने कहा कि भारतीय संस्कृति में परिवार और सामाजिक संबंधों की मजबूत परंपरा रही है। कई परिवारों में पांच, छह और सात पीढ़ियों तक रिश्तों को निभाने की परंपरा देखने को मिलती रही है। उनके अनुसार, पारिवारिक रिश्तों में

पास्परिक सम्मान, जिम्मेदारी और भावनात्मक जुड़ाव जीवन को स्थिरता प्रदान करते हैं। उन्होंने बदलती जीवनशैली और उपभोक्तावाद प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक जीवन में बढ़ती व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण पारंपरिक पारिवारिक ढांचे पर प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने इसे समाज के लिए गंभीरता से विचार करने वाला विषय बताया। विवाह और परिवार को लेकर जताई चिंता जैनाचार्य ने अपने संबोधन में भविष्य में विवाह और परिवार व्यवस्था से संबंधित संभावित सामाजिक बदलावों को लेकर भी चिंता व्यक्त की। उन्होंने दावा किया कि आगामी वर्षों में विभिन्न समुदायों में विवाह की आयु बढ़ने, अविवाहित रहने की प्रवृत्ति और एगिजिशन ग्राउंड स्थित जगद्धु हेसूरुप्ति वाटिका में आयोजित पारिवारिक सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं जिज्ञासु उपस्थित रहे। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था को बताया महत्वपूर्ण आचार्य विमलसागरसूरीश्वर ने कहा कि भारतीय संस्कृति में परिवार और सामाजिक संबंधों की मजबूत परंपरा रही है। कई परिवारों में पांच, छह और सात पीढ़ियों तक रिश्तों को निभाने की परंपरा देखने को मिलती रही है। उनके अनुसार, पारिवारिक रिश्तों में



आचार्य ने महिला सशक्तीकरण और बदलती सामाजिक भूमिका पर भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता महत्वपूर्ण है, लेकिन परिवार और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने पर भी समाज को विचार करना चाहिए। हालांकि, महिला शिक्षा, रोजगार और सशक्तीकरण आधुनिक समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। इसलिए इन विषयों पर चर्चा करते समय महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों को केवल निःसंतान दंपतियों की संख्या बढ़ सकती है। उन्होंने इसके पीछे बदलती जीवनशैली, देर से विवाह, व्यसन, खानपान में बदलाव तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देने जैसी प्रवृत्तियों को संभावित कारणों के रूप में गिनाया। इन आंकड़ों और भविष्य संबंधी आकलनों को उन्होंने अपने विचार के रूप में प्रस्तुत किया। ऐसे अनुमानों की स्वतंत्र पुष्टि कार्यक्रम में उपलब्ध कराई गई जानकारी से नहीं हुई। महिला सशक्तीकरण पर संतुलित दृष्टि की जरूरत

अनुसार, मजबूत परिवार के लिए केवल परंपरा पर्याप्त नहीं है। परंपरा के साथ संवाद, आपसी सम्मान, बदलती परिस्थितियों की समझ और नई पीढ़ी की आवश्यकताओं को समझना भी जरूरी है। दीप प्रज्वलन एवं बहुमान समारोह वर्षावास समिति के मुख्य संयोजक मोहनलाल वामेरवा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत वर्षावास के संरक्षक, मुख्य लाभार्थी एवं विंशष्ट लाभार्थियों के हाथों मंगलमय दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर अतिथियों एवं लाभार्थियों का भालतिलक, हार, श्रीफल, शॉल, चुनरी और स्मृतिचिह्न भेंट कर बहुमान किया गया। गणित्वय पदविमलसागर ने पारिवारिक सेमिनार की संयोजना की। फुल्ले चोहैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। सेमिनार के समापन पर परिसंवाद का आभोजन किया गया, जिसमें उपस्थित लोगों ने पारिवारिक एवं सामाजिक विषयों पर विचार साझा किए। कार्यक्रम में परिवार, संस्कार और सामाजिक संबंधों को लेकर संवाद को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। बदलते समय में पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ रखते हुए शिक्षा, महिला आत्मनिर्भरता, जवाड़ि कि समाज कई बार धार्मिक आवोजनों और सामाजिक प्रतिष्ठा की गतिविधियों में तो सक्रिय रहता है, लेकिन परिवारों के भीतर उभर रही समस्याओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता। उनके

